भाषा । साहित्य । संस्कृति

# प्रश्नचिह्न



मैं तुम्हें
देना चाहता हूँ
आईने की तरह
साफ़ कुछ वाक्य
ताकि तुम देखो सको
सही सही चेहरा
अपना और समय का

~ विहाग वैभव

वर्ष : 02 | अंक : 23 | फरवरी 2026

9 789356 928428

आवरण : प्रतिभा मिश्रा

संपादक : आलोक रंजन

भाषा । साहित्य । संस्कृति

# प्रश्नचिह्न

फरवरी 2026 । तेइसवाँ अंक

**प्रबंध सम्पादकः**
**राहुल राज**

**प्रबंध सहयोगः**
**सौरव कुमार भारती**

**सम्पादक**
**आलोक रंजन**

**आवरणः प्रतिभा मिश्रा**
**रेखांकनः श्वेता कुमारी**

**अक्षर संयोजन**
**खुशी**

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए प्रश्नचिह्न पत्रिका समूह का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही पत्रिका इसके लिए उत्तरदायी है।

**वार्षिक मूल्य :**

| | |
|---|---|
| व्यक्तियों के लिए- | 600.00 रुपये |
| संस्थाओं और पुस्तकालयों के लिए- | 1500.00 रुपये |
| विदेशों में- | $25 |

**एक प्रति का मूल्य :**

| | |
|---|---|
| व्यक्तियों के लिए- | 50.00 रुपये |
| संस्थाओं के लिए- | 100.00 रुपये |
| विदेशों में- | $10 |

**विज्ञापन दरें :**

| | |
|---|---|
| बाहरी कवर- | 20,000.00 रुपये |
| अन्दर कवर- | 15,000.00 रुपये |
| अन्दर पूरा पृष्ठ- | 10,000.00 रुपये |
| अन्दर का आधा पृष्ठ- | 7,000.00 रुपये |

**संपादकीय कार्यालयः**

8/54 - ए, प्रथम तल, डबल स्टोरी,
विजय नगर, दिल्ली - 110009
मोबाइल : 9155113056

ई-मेल: prashanchinha.patrika@gmail.com
infoprashanchinha.patrika@gmail.com

वेबसाईट: https://prashanchinhapatrika.blogspot.com

फेसबुक: https://www.facebook.com/prasnacihnapatrika

इंस्टाग्राम: https://www.instagram.com/prashanchinha.patrika

# अनुक्रम

**सम्पादकीय**

**कविताएँ**

विहाग वैभव, आनंद दास, निर्मल गुप्त

डॉ. खेमकरण 'सोमन', आकांक्षा मधुर

**कहानियाँ**

प्रदीप कुमार राय

इन्दु सिन्हा"इन्दु"

**लघुकथा**

सेवा सदन प्रसाद

**समीक्षा**

डॉ. नीलोत्पल रमेश

**विविध**

साहित्यिक समाचार

# विस्थापन और संघर्ष

संपादकीय

फरवरी का यह अंक विस्थापन और संघर्ष जैसे दो ऐसे शब्दों के साथ आपके समक्ष है, जो आज केवल साहित्यिक प्रतीक नहीं, बल्कि हमारे समय की कठोर सच्चाई बन चुके हैं। एक ओर व्यक्ति अपने ही शहर, अपने ही समाज और अपने ही सपनों से विस्थापित होता जा रहा है। दूसरी ओर संघर्ष उसकी नियति बनता जा रहा है। यही द्वंद्व इस अंक की मूल संवेदना है।इस अंक में युवा कवि विहाग वैभव की कविताएँ विशेष रूप से शामिल हैं, जिनमें नई पीढ़ी की बेचैनी, प्रश्न और प्रतिरोध की स्पष्ट ध्वनि सुनाई देती है। उनकी पंक्तियाँ केवल भावनात्मक आवेग नहीं, बल्कि अपने समय से मुठभेड़ करने का साहस भी हैं। आज जब कविता के स्तर और उसके उद्देश्य पर निरंतर बहस हो रही है, तब ऐसे युवा स्वर उम्मीद जगाते हैं कि साहित्य अभी भी समाज का आईना बनने की क्षमता रखता है।

बीते एक महीने में देश ने अनेक समस्याओं का सामना किया है। आर्थिक असमानता, सामाजिक असुरक्षा और विशेष रूप से दिल्ली में लोगों के अचानक गायब होने की घटनाएँ। यह केवल समाचार की सुर्खियाँ नहीं, बल्कि हमारे सामूहिक भय और अस्थिरता का संकेत हैं। जब राजधानी जैसे महानगर में भी नागरिक स्वयं को सुरक्षित नहीं महसूस करते, तब यह प्रश्न और भी गहरा हो जाता है कि विकास के दावों के बीच मानवीय सुरक्षा और संवेदना कहाँ खड़ी है?
साहित्य का दायित्व केवल सौंदर्य रचना नहीं, बल्कि समय की नब्ज़ को पहचानना भी है। परंतु आज साहित्य के पाठकों की संख्या में कमी चिंता का विषय बनती जा रही है। डिजिटल युग में त्वरित मनोरंजन ने गहन पठन की आदत को चुनौती दी है। कविता का स्तर, उसकी प्रतिबद्धता और उसकी सामाजिक भूमिका इन सभी पर गंभीर विमर्श आवश्यक है। यदि पाठक और रचनाकार दोनों ही आत्ममंथन करें, तभी साहित्य अपनी प्रासंगिकता बनाए रख सकेगा।

प्रश्नचिह्न का यह अंक किसी निष्कर्ष का दावा नहीं करता, बल्कि प्रश्नों को जीवित रखने का प्रयास है। विस्थापन के विरुद्ध संवेदना, संघर्ष के बीच आशा, और अराजक समय में रचनात्मकता यही हमारी दिशा है।